Toppersnotes®
Unleash the topper in you

SET

State Eligibility Test

राज्य पात्रता परीक्षा

राजनीति विज्ञान

पेपर – 2 II भाग – 1

राजनीतिक सिद्धांत एवं राजनीतिक विचारक

SIERRA INNOVATIONS

	Unit -1 राजनीतिक सिद्धांत	
1.	न्याय	1
2.	स्वतंत्रता	19
3.	समानता	38
4.	अधिकार	53
5.	लोकतंत्र	63
6.	शक्ति	104
7.	नागरिकता	108
8.	उदारवाद	113
9.	अनुदारवाद	117
10.	समाजवाद	121
11.	मार्क्सवाद	124
12.	नारीवाद	125
13.	पारिस्थितिकवाद	128
14.	बहुसंस्कृतिवाद	132
15.	उत्तर – आधुनिकवाद	136
	Unit -2 राजनीतिक विचारक	
1.	पश्चिम विचारक	144
2.	प्लेटो	146
3.	अरस्तू	168
4.	मध्ययुगीन विचारक	183
5.	निकालो मैकियावली	191
6.	समझौतावादी विचारक	198
7.	थॉमस हाब्स	198

8.	जॉन लॉक	209
9.	जे. जे. रूसो	216
10.	उपयोगितावादी विचारक	223
11.	जर्मी बेयम	224
12.	जे. एस. मिल	230
13.	कार्ल मार्क्स	240
14.	वी. आई. लेथिन	256
15.	राजनीतिक विचारक	261
16.	कन्फूशियस	261
17.	हीगल	264
18.	मेरी वोल्स्टनोक्राफ्ट	271
19.	ग्राम्शी	274
20.	हैन्ना आरैण्ट	279
21.	फ्रांज फैनन	286
22.	माओ जेडांग	289
23.	जॉन रॉल्स	295

न्याय (Justice)

न्याय राजनीति शास्त्र का प्राचीन विषय है जो परम्परागत दृष्टिकोण से सम्बन्धित है
न्याय का ऐतिहासिक विकास इस प्रकार है (3 चरणों में)

(1). प्लेटो अपनी "रिपब्लिक" (Republic) में न्याय आधार सद्गुण पर आधारित कर्तव्य पालन (या मानव आत्मा से सम्बन्धित) को बताता है।

① प्राचीनकाल

(2). अरस्तु अपनी पुस्तक " Politics" (पालिटिक्स) में न्याय का आधार विधि पर आधारित न्याय को महत्वपूर्ण मानता है।

(3). मध्य काल में यूरोप में "चर्च-राज्य के मध्य संघर्ष प्रचलित था" इसलिए न्याय को लेकर भी विद्वानों के निम्न 2 मत थे।

② मध्यकाल

(अ) ईसाईवादी विचारक चर्च को न्याय का स्त्रोत मानते हैं इस श्रेणी के प्रमुख विचारक हैं- चर्च-राज्य के मध्य संघर्ष

- पापगेल्सियस
- सेन्ट आगस्टाइन
- थॉमस एक्वीनास

TSB

(ब) अरस्तुवादी विचारकों के अनुसार न्याय का स्त्रोत राज्य है। इस श्रेणी के प्रमुख विचारक हैं-

- मार्सीलियो डी पाडुवा
- दॉते एलीघिरा

MTM

Toppersnotes
Unleash the topper in you

③ आधुनिक युग में न्याय – (संसाधनो के वितरण संबंधी सम्बन्धित न्याय)

न्याय

अ. औपचारिक / नकारात्मक / प्रक्रियात्मक न्याय

(1) योग्यता का समर्थन
आरक्षण का विरोध

(2) राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र / हस्तक्षेप

(3) न्याय के 2 प्रमुख प्रकार
(अ) राजनैतिक न्याय
(ब) कानूनी न्याय

(4) समर्थक –
(अ) परम्परागत उदारवादी
– लॉक
– हर्बर्ट स्पेंसर
– एडम स्मिथ

(ब) स्वेच्छातंत्रवादी
(अ) आइजिया बर्लिन
(ब) एफ. ए. हेयक

(ब) अनौपचारिक / सकारात्मक / तात्विक न्याय

(1) योग्यता + आरक्षण का समर्थन

(2) लोक कल्याणकारी राज्य

(3) न्याय के दो प्रमुख प्रकार है
(अ) सामाजिक न्याय
(ब) आर्थिक न्याय

(4) समर्थक –
(अ) सकारात्मक उदारवादी
– लास्की
– मिल
– ग्रीन

(ब) समतावादी – जान रॉल्स
अमर्त्यसेन

(स) समुदायवादी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Not – 1. उदारवादी – स्वतन्त्रता पर
2. समाजवादी – समानता पर
3. समुदायवादी – बंधुता पर बल देते है।

उदारवादी विचार धारा मूलतः पूंजीवादी विचारधारा पर आधारित है जिसका विकास इस प्रकार हुआ →

उदारवाद

① परम्परागत / शास्त्रीय / व्यक्तिवाद उदारवाद
- ① – योग्यता का समर्थन, आरक्षण का विरोध
- ② राज्य का न्यूनतम कार्य क्षेत्र
- ③ समर्थक – जान लॉक, हरबर्ट स्पेंसर, एडम स्मिथ

② सकारात्मक उदारवाद
- ① योग्यता + आरक्षण का समर्थन
- ② कल्याणकारी राज्य
- ③ समर्थक – मिल, लास्की, ग्रीन

③ समकालीन उदारवाद

स्वेच्छातन्त्रवादी
- राज्य के अन्तर्गत
- आइजिया बर्लिन
- एफ. ए. मेयक
- मिल्टन फीडमेन
- राबर्ट नॉजिक

नवउदारवाद
- अन्तराष्ट्रीय राजनीति मे परम्परागत उदारवाद के गुणो को अपनाना चाहते है – इसके प्रमुख समर्थक –
पास्कल लामी

समतावादी
- योग्यता + आरक्षण
- लोक कल्याणकारी राज्य
- समर्थक – जॉन रॉल्स, अमर्त्य सेन, अरविन्द पनगड़िया, जगदीश भगवती, अशोक गेहलोत

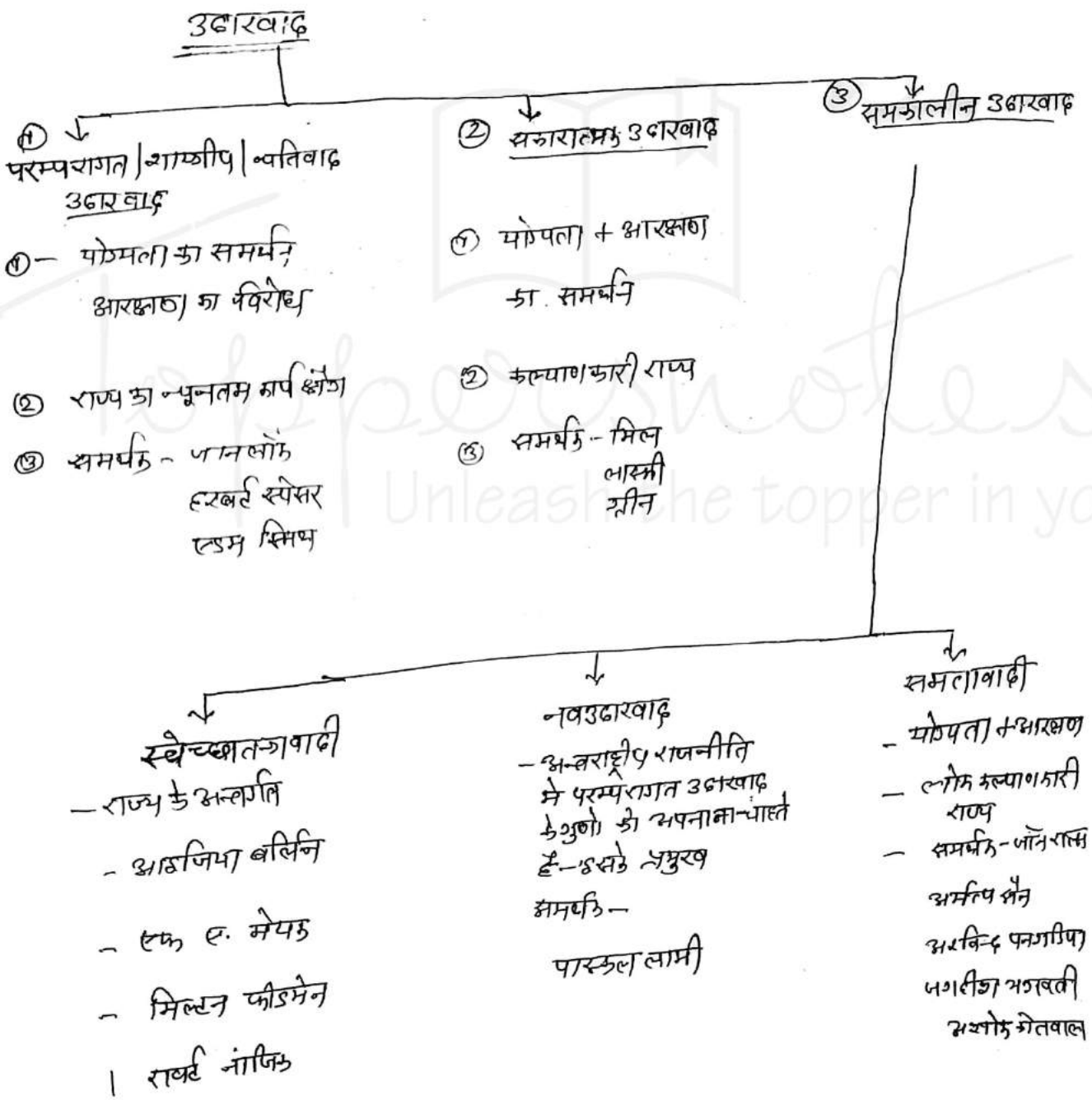

Toppersnotes
Unleash the topper in you

- आधुनिक न्याय का मूल विषय- संसाधनो का वितरण है।
- संसाधनो के वितरण को लेकर आधुनिक युग मे दो (2) धारणाए हैं।

अ. योग्यता के आधार पर वितरण-
- इसे औपचारिक/नकारात्मक/प्रक्रियात्मक न्याय का सिद्धांत भी कहते है-
- 1. इस अवधारणा के अनुसार संसाधनो के वितरण का आधार- योग्यता होना चाहिए। और आरक्षण का विरोध।

2. यह राज्य के न्यूनतम् कार्यक्षेत्र का समर्थन करती है।

3. यह शाखा (2) दो प्रकार के न्याय के सिद्धान्त का समर्थन करती है-

(A) राजनीतिक न्याय- यह समान मताधिकार व सभी को चुनाव लड़ने के अधिकार का समर्थन करते है।

(B) कानूनी न्याय- अर्थात विधि के समक्ष सभी समान है। अतः विधि के समक्ष समानता का समर्थन करता है।

4 समर्थक है-
(अ) परम्परागत उदारवादी- (लॉक, हरबर्ट स्पेंसर, एडम स्मिथ)
(ब) स्वेच्छातन्त्रवादी- (आइजिया बर्लिन, एफ ए हेयक, मिल्टन फ्रीडमैन, रॉबर्ट नॉजिक)।

(स) अन्य समर्थक- लार्ड एक्टन
डी. एकविले
जेम्स ब्राइस

अनौपचारिक / सकारात्मक / तात्विक न्याय (substantive) →

① यह शाखा योग्यता के साथ आरक्षण पर विशेष जोर देती है।
② राज्य की कल्याणकारी भूमिका का समर्थन करती है।
③ यह शाखा भी 2 प्रकार के न्याय के सिद्धान्त का समर्थन करती है।

(A) सामाजिक ~~न्याय~~ न्याय

देश के संसाधनों का वितरण इस प्रकार करना कि सबसे पिछड़े वर्ग को उसका उचित भाग प्राप्त हो।

(B) आर्थिक न्याय →
सभी की न्यूनतम आवश्यकता (जैसे – रोटी, कपड़ा और मकान) की पूर्ति हो।

Q. समर्थक —
(1) सकारात्मक उदारवादी – मिल
लास्की
ग्रीन
हॉब हाउस
रोल्स

(2) समतावादी — जॉन रॉल्स
अमर्त्य सेन
जगदीश भगवती
अशोक कोतवाल

③ समुदायवादी — माइकल वॉल्जर (4) समाजवादी
इला आहेर
विल किमलिका
~~मीरा~~ नीरा चंधोक
रोनाल्ड ड्वॉर्किन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1. जॉनराल्स का न्याय का सिद्धान्त :-

- अमेरिका का राजनीतिक दार्शनिक
- गोरे-काले का नृजातीय संघर्ष को दूर करता
- A Theory of Justice (1971) में दिया
- लॉक व काण्ट से प्रभावित होकर "प्राकृतिक अवस्था की परिकल्पना करता है जिसे मूल स्थिति कहते है -
  1. अज्ञान के पर्दे के पीछे
  2. नैतिकता के स्थान से दूर
  3. विवेकशील
  4. प्राथमिक वस्तुओं (पद, पैसा, न्याय स्वतन्त्रता, अधिकार) के वितरण के बारे में कानून
- न्याय के न्यूनतम न्याय के नियम
  1. समान स्वतंत्रता नियम
  2. सामाजिक आर्थिक नियम
  - (A) तर्क संगठन के सकारात्मक कार्य कौल
  - (B) अवसर की समस्या

→ जान रॉल्स के न्याय सिद्धान्त की विशेषताएँ

4.
- प्रगति / न्याय से संघर्ष होने पर न्याय पर (नोजीर का कथन)
- शुद्ध प्रक्रियात्मक प्रगति + आरक्षण
- हस्तांतरण शाखा (न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति)
- पूर्व सामाजिक विकास पर बल)

जान रॉल्स अमेरिकी राजनीति दार्शनिक समतावादी विचारक है।
जान राल्स अमेरिका में गोले-काले संघर्ष (नृजाति संघर्ष) को दूर करने के लिए अपनी पुस्तक A Theory of Justice (1971) में न्याय का सिद्धान्त देता है।

– जॉन राल्स का न्याय का सिद्धान्त लॉक व कान्ट से प्रभावित था।

–

जॉन राल्स लॉक की "प्राकृतिक अवस्था की संकल्पना" से प्रभावित होकर "मूल स्थिति की संकल्पना" देता है।

– जान रॉल्स इस मूल स्थिति की निम्न विशेषताएँ बताता है।

1. इसमें व्यक्ति अज्ञान के पर्दे में पीछे रहेंगे। अर्थात व्यक्ति भौतिकवादी (छल-कपट से दूर) ज्ञान से परे होगा।
2. सभी व्यक्ति नैतिकता के बंधन से बंधे होंगे।
3. व्यक्ति विवेकशील होंगे अर्थात उनको छोटा-मोटा अर्थ का ज्ञान भी होगा वे तार्किक होंगे।
4. व्यक्ति प्राथमिक वस्तुओं (पद, पैसा, स्वतन्त्रता, अधिकार) के वितरण के बारे में नियम बनायेंगे।
5. मूलस्थिति में व्यक्ति न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति पर/क्षतिपूर्ति पर आधारित नियम बनाएँगे।
6. मूल स्थिति में व्यक्ति सामाजिक समझौते के माध्यम से न्याय के नियम बनाएंगे।

7 जॉन रॉल्स के अनुसार व्यक्ति न्याय के नियम (न्याय के उचित क्षेत्र) बतायेंगे।

(1) समान स्वतन्त्रता का नियम - सभी व्यक्तियों को पहले स्वतंत्रता का अधिकार दिया जायेगा (संविधान के Art 19)

(2) सामाजिक आर्थिक नियम - इस नियम के अन्तर्गत जॉनरॉल्स नियम बताता है।

(a) अवसर की समानता (संविधान के Arts - 16(1)(2),

(B) तर्कसंगत भेदभाव / उल्टा भेदभाव / आरक्षण / सकारात्मक कार्यवाई अर्थात गरीबो को आरक्षण - (Art 15(4), 16(4)

→ जॉन रॉल्स के अनुसार उपयुक्त न्याय के नियम को क्रमानुसार ही लागू किया जाना चाहिए अर्थात 1 2(A) 2(B)

न्याय सिद्धान्त की विशेषता :-

(1) प्रगति / न्याय में संघर्ष होने पर न्याय का पक्ष लेना चाहिए क्योंकि " कोई भी समाज जंजीर के समान होता है। और कोई भी जंजीर, सबसे कमजोर कड़ी से ज्यादा मजबूत नही होती है।

(2) हस्तानांतरण शाखा पर बल :-

रॉल्स के अनुसार हस्तानांतरण शाखा पिछड़े वर्ग को न्याय प्रदान करने का कार्य करेगी।

जैसे :- यह भारत की उचित मूल्य की दुकाने / राशन की दुकान के समान है।

सम्पूर्ण समाज के विकास पर जोर–

रॉल्स का न्याय सिद्धान्त सम्पूर्ण समाज के विकास पर जोर देता है। इसी आधार पर रॉल्स बेंथम के उपयोगितावादी सिद्धान्त की आलोचना करता है कि बेंथम का उपयोगितावाद केवल 51% के विकास पर जोर देता है जबकि 49% की अवहेलना करता है।

4. रॉल्स के अनुसार उसका न्याय सिद्धान्त शुद्ध प्रक्रियात्मक न्याय का सिद्धान्त है। क्योंकि इस सिद्धान्त में योग्यता (प्रगति) व आरक्षण दोनों को अपनाता गया है।

जैसे 1, 2 (A) नियम तो योग्यता पर बल देता है।

2 (B) आरक्षण पर बल देता है।

वस्तुतः जॉन रॉल्स 3 प्रकार के न्याय सिद्धान्तों की चर्चा करता है–

पूर्ण प्रक्रियात्मक	अपूर्ण प्रक्रियात्मक	शुद्ध प्रक्रियात्मक
योग्यता और निष्पक्षता पर जोर जैसे– केसिनो के खेल में।	मानदण्ड या मूल्य/ आरक्षण पर जोर जैसे– केक काटने व बाटने वाला सबसे अन्त में केक का टुकड़ा लेगा	% योग्यता + आरक्षण, निष्पक्षता + मानदण्ड

Toppersnotes
Unleash the topper in you

6 - राल्स का जीवन काल - (1921 - 2002 तक)

इनकी प्रमुख पुस्तकें निम्न है-

ग्रंथ - A Theory of Justice (1971)

- Justice of fairness (1985) - इसमें न्याय के नियमों को उचित खेल की संज्ञा दी
- Political leberlism (1993)
- On Background Justice (1995)
- The laws of Peoples (1997)
- lectures on the History of Moral Philosophy (2000)

आलोचना - राल्स के न्याय सिद्धान्त की आलोचना समाजवादी व स्वेच्छातं. दोनों करते है।

1. - समाजवादियों का कहना है कि जान राल्स पूँजीवाद मे न्याय ढुंढता है पूंजीवाद न्याय की सम्भावना नही है।

2. - स्वेच्छातंत्रवादी कहते है कि राल्स ने आरक्षण को अपनाकर प्रगति की अवहेलना की है।

3. - समतावादी अमर्त्य सेन भी अपनी पुस्तक " Idea of Justice " राल्स की आलोचना करता है और लिखा है कि जहां राल्स आरक्षण सबसे अन्त मे लागू करता है जबकि आरक्षण को सबसे पहले लागू करना चाहिए । इनका कथन है कि -
जान रांल्स "बांसुरी तो सभी को बांटता है लेकिन बजाना नही सिखाता है",

Toppersnotes
Unleash the topper in you

महत्व

1. जान रॉल्स के न्याय सिद्धान्त के माध्यम से बहुजातिय संघर्ष की समस्या का समाधान किया गया है।
   → अर्थात पिछड़े वर्गों को आरक्षण दे रहे हैं।
   → भारत ने भी उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र में अलगाववादी / आंतकवादी समस्या का समाधान किया। श्रीलंका भी अपनी तमिल समस्या का समाधान जान्य रॉल्स के अनुरूप कर रहा है।

2. 1991 के बाद भारत में जान रॉल्स के अनुरूप प्रगति और न्याय में समन्वय किया जा रहा है जैसे 8% आर्थिक वृद्धि के साथ-2 गरीबों के कल्याण पर बल।

3. WTO में भी रॉल्स के अनुसार प्रगति व आरक्षण दोनों को अपनाया जा रहा है
   जैसे- 2013 में बाली मंत्रीस्तरीय सम्मेलन में सब्सिडी पर सहमति बनी है।
   - विकासशील देशों को कृषि सब्सिडी देना।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

२. माइकल वाल्जर का न्याय का सिद्धान्त :-

यह समुदायवादी विचारक हैं जो बन्धुता व कर्तव्य पालन पर विशेष बल देता हैं।

→ माइकल वाल्जर अपनी पुस्तक "स्फीयर्स ऑफ जस्टिस" 1983 में जान राल्स की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप न्याय का सिद्धान्त प्रस्तुत करता हैं जिसकी निम्न विशेषता बताता हैं :-

(1) बहुलवादी विषय क्षेत्र पर आधारित न्याय होना चाहिए अर्थात् अलग-२ क्षेत्रों के लिए न्याय के नियम अलग-२ होने चाहिए।

(2) बहुलवादी वस्तु क्षेत्र का नियम हैं- बहुलवादी वस्तु क्षेत्र पर व्यवस्था होना चाहिए अर्थात् एक क्षेत्र की विभिन्न वस्तुए के लिए भी न्याय के नियम अलग होने चाहिए। जैसे - आर्थिक क्षेत्र की वस्तु A.C पर कर अधिक लगाना चाहिए तथा रोटी, ब्रेड पर — " कम "।

(3) माइकल वाल्जर जटिल समानता पर अधिक बल देते हैं। अर्थात आर के अन्दर आरक्षण (Setting of Setting) को महत्वपूर्ण मानता हैं।

जैसे - S.C., S.T. और O.B.C में महिलाओं को आरक्षण।
— S.T को TSP में आरक्षण।

4. माइकल वाल्जर का सिद्धान्त लोकतांत्रिक बहुलवादी विकेन्द्रीकृत समाज में लागू हो सकता है।

5. इनके अनुसार कल्याणकारी राज्य पर बल देना चाहिए।

निष्कर्ष -

यह सिद्धान्त सैद्धान्तिक रूप से तो अच्छा है लेकिन व्यावहारिक नहीं है। अर्थात इसको व्यवहार में अपनाना कठिन है।

- फिर भी आज अनेक लक्षणों को आज अपनाया जा रहा है।

जैसे- ① आज भारत में विभिन्न क्षेत्रों में लिए अलग-2 न्यायाधिकरण स्थापित किये जा रहे हैं। कर विभाग-न्यायाधिकरण, बीमा सम्बन्धी न्यायाधिकरण

② इसी प्रकार भारतीय संविधान के Art. 323 (A), 323 (B) भी माइकल वाल्जर के बहुलवादी विचार क्षेत्र की अवधारणा पर आधारित है।

- ये अनुच्छेद 42 वें संविधान संशोधन (1976) द्वारा जोड़े गये।

(3) रॉबर्ट नाजिक - स्वेच्छातंत्रवादी विचारक है।
- यह प्रगतियोग्यता पर बल देता है व आरक्षण की आलोचना करता है और राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र का समर्थन करता है
- यह अपनी पुस्तक "एनार्की स्टेट एण्ड यूटोपिया" में 1974 में न्याय की विशेष चर्चा करता है।
- यह न्याय के 2 दो सिद्धान्त बताता है।

(1) साध्यमूलक न्याय
मानदण्ड + आरक्षण

(2) ऐतिहासिक मूलक / अधिकारिता
- केवल योग्यता

(1) साध्यमूलक न्याय → इस प्रकार न्याय मानदण्ड व आरक्षण पर बल देता है। नाजिक का कहना है कि इसमें प्राप्ती में बाधा पहुचती है। इसलिए हमें इस सिद्धान्त पर बल नही देना चाहिए इनका कहना है कि बेंथम का न्याय सिद्धान्त इसी श्रेणी का।

(2) ऐतिहासिक मूलक →
रॉबर्ट नाजिक के अनुसार यदि किसी व्यक्ति ने कोई इतिहास से न्यायपूर्ण तरीके से अर्जित की है तो वह उनका पूर्णस्वामी होगा।

राज्य को ऐसी सपत्ति पर कर नही लगाना चाहिए रॉबर्ट नाजिक इसे हकदारिता का सिद्धान्त कहता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राबर्ट नॉजिक का यह सिद्धान्त प्रगति (योग्यता) के अनुकूल है इसलिए श्रेष्ठ है

इस सिद्धान्त के तीन (3) नियम है-

1. न्यायपूर्ण अधिग्रहण का नियम- किसी व्यक्ति ने कोई वस्तु न्यायपूर्ण तरीके से अर्जित की है तो वह उसका पूर्णस्वामी है और राज्य को उस पर कर नही लगाना चाहिए।

2. न्यायपूर्ण स्थानान्तरण का नियम - यदि किसी व्यक्ति ने कोई वस्तु न्याय पूर्ण तरीके से प्राप्त की है तो वह उसे कितने मे भी स्थानान्तरण (विक्रय) कर सकता है।

3. परिष्करण का नियम - इसमे कहता है कि इतिहास मे कोई गलती हुई तो उसमे छोटा मोटा सुधार किया जा सकता है। अतः नॉजिक आरक्षण के स्थान पर छात्रावृत्ति की बात करता है। समर्थन

- नॉजिक के अनुसार उसका न्याय सिद्धान्त पूंजीवादी लोकतांत्रिक समाज मे लागू हो सकता है उसमें राज्य की शक्ति का अन्त हो जायेगा अर्थात यूटोपिया की स्थिति आ जायेगी। नॉजिक पैटेन्ट व्यवस्था का भी समर्थन करता है लेकिन कहता है कि यदि मरुस्थल मे पानी का एक स्रोत है तो उस पर पेटेन्ट नही हो सकता है।